क्या आप जानते हो

सॉफ्टवेयर बताएगा, कब लिखी गई बाइबिल

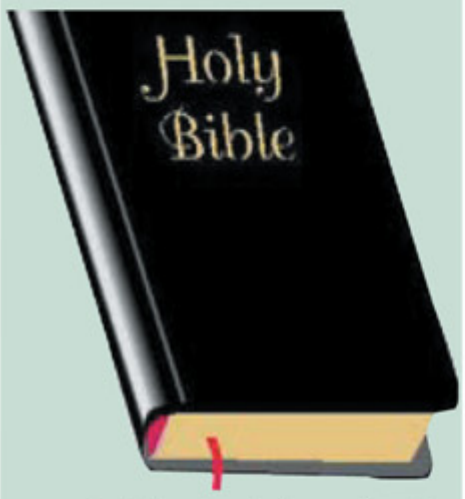

सदियों से बाइबिल के लेखक और उसके लिखे जाने के समय को लेकर लगाई जा रही अटकलों को अब विराम मिलेगा। वैज्ञानिकों ने ऐसा सॉफ्टवेयर बनाया है जो बाइबिल के लेखक की पहचान अल्गोरिथम की मदद से कर सकेगा।

इजरायल के वैज्ञानिकों के अनुसार यह सॉफ्टवेयर लिखने की शैली की पहचान कर सकता है। हालांकि यह किसी व्यक्ति विशेष का नाम नहीं ले सकता कि किसने बाइबिल लिखी। लेकिन कौनसा पैराग्राफकब और कितने लोगों ने लिखा है, इसकी जानकारी दे सकता है। किस पैराग्राफ पर नए लेखक ने लिखना शुरू किया यह भी पता लगा सकता है। उदाहरण के लिए, माना जाता है कि तोराह (बाइबिल की पहली पांच किताबें) एक ही इंसान- मोसेस ने लिखी हैं। लेकिन कई विशेषज्ञों का मानना है कि इसमें कई लेखक शामिल थे। तेल अवीव यूनिवर्सिटी के ब्लावात्निक स्कूल ऑफकंप्यूटर साइंस के प्रमुख शोधकर्ता प्रो. नैशम दैशरेवित्ज ने इस सॉफ्टवेयर का परीक्षण किया। उन्होंने इसमें जेरेमियाह और एजकील की हेब्रू भाषा की दो किताबें लेखकों की पहचान करने के लिए फीड कीं। सॉफ्टवेयर ने शब्दों के आधार पर 99 प्रतिशत सही और सटीक जवाब दिए।

ग्लोबल वार्मिंग को समझें!!!!

तापमान बढ़ने लगा है। ऐसे में लोग एसी और फ्रिज की मदद से अपने आपको चिल रखने की जुगत में लग गए हैं। लेकिन एसी और फ्रिज से हमारे वातावरण को काफी नुकसान हो रहा है। इन कूलिंग उपकरणों से क्लोरोफ्लोरा कॉर्बन गैसें उत्सर्जित होती हैं,जिससे ग्लोबल वार्मिंग की समस्या हो रही है। जानें कैसे?

गर्मियां बढ़ने लगी हैं। गर्मी से बचने के लिए लोग एसी, फ्रिज कूलर आदि कूलिंग मशीनों का प्रयोग करते हैं। इससे उन्हें गर्मी से तो राहत मिल जाती है लेकिन इन कूलिंग मशीनों से निकलने वाली गैसों से वातावरण पर बुरा प्रभाव पड़ रहा है। इन गैसों को क्लोरोफ्लोरो कार्बन गैसें कहते हैं। इन गैसों के दुष्प्रभाव से हमें ग्लोबल वार्मिंग का सामना करना पड़ रहा है।

ग्लोबल वार्मिंग का मतलब है कि पृथ्वी लगातार गर्म होती जा रही है। तो वैश्विक तापमान में वृद्धि हो रही है। वैज्ञानिकों का कहना है कि अगर इस पर रोक न लगाई गई, पृथ्वी पर जीवन संकट में पड़ सकता है। तापमान के बढ़ने से आने वाले दिनों में सूखा बढ़ेगा, बाढ़ की घटनाएं बढ़ेंगी और मौसम प्रभावित होगा। ठंड के दिनों में ठंड नहीं पड़ेगी और गर्मी के दिन लम्बे हो जाएंगे।

क्या होगा असर

ग्लोबल वार्मिंग का असर दिखने भी लगा है। तापमान के बढ़ने से ग्लेशियर पिघल रहे हैं और रेगिस्तान बढ़ते जा रहे हैं। कहीं असामान्य बारिश हो रही है, तो कहीं असमय ओले पड़ रहे हैं। जाहिर सी बात है गर्मियां ज्यादा होंगी, तो मच्छर ज्यादा होंगे और बीमारियों के बढ़ने के आसार होंगे। ग्लेशियरों के लगातार पिघलने के कारण पीने के पानी के स्रोत में कमी होगी। वैज्ञानिकों की मानें तो इस परिवर्तन के पीछे ग्रीन हाउस गैसों की मुख्य भूमिका है, जिन्हें सीएफसी या क्लोरो फ्लोरो कार्बन गैसें भी कहते हैं। इनमें कार्बन डाई ऑक्साइड है, मीथेन और नाइट्रस ऑक्साइड गैसें आती हैं।

कैसे काम करती हैं ग्रीन हाउस गैसें

उद्योगों के विस्तार से ग्रीन हाउस गैसें वातावरण में बढ़ती जा रही हैं, और इससे ओजोन परत में छेद का दायरा भी बढ़ रहा है। ओजोन की परत सूरज और पृथ्वी के बीच एक कवच की तरह है। ओजोन परत ऐसा कवच है, जिससे सूरज की अल्ट्रावायलेट किरणें हम तक नहीं पहुंच पातीं। जिस वजह से हम तमाम तरह के त्वचा रोगों से बचे रहते हैं।

क्या कारण है ग्लोबल वार्मिंग का

तापमान में आए दिन जो बढ़ोत्तरी सुनने को मिल रही है। इसके पीछे तेजी से उद्योगों का बढ़ना भी एक कारण है। हमने अपने आवास के लिए जिस तरह से जंगलों को तेजी से काटा है, वह भी नुकसान पहुंचा रहा है। पेट्रोलियम पदार्थों के धुंए से होने वाला प्रदूषण इन्हीं कारणों में शामिल है। हम एसी और फ्रिज से अपने को ठंडा तो रख लेते हैं। लेकिन क्लोरोफ्लोरो कार्बन गैसें सबसे ज्यादा इन्हीं उपकरणों से उत्सर्जित होती हैं। इसलिए इनका प्रयोग जरूरत के हिसाब से करना होगा, ताकि गैसों का उत्सर्जन कम से कम हो।

क्या होगा असर

वैज्ञानिकों के अनुसार इस समय दुनिया का औसत तापमान 15 डिग्री सेंटीग्रेड है और आने वाले दिनों में इसमें और भी वृद्धि हो सकती है। जब तापमान के बढ़ने से ग्लेशियर पिघलेंगे तो समुद्र का जल स्तर बढ़ेगा। और समुद्री इलाकों के आस-पास रहने वालों को परेशानी होगी। सूनामी जैसी आपदाओं के आने पर ज्यादा जानमाल का नुकसान होगा।

ग्लोबल वार्मिंग को रोकने के उपाय

ग्लोबल वार्मिंग को रोकने के लिए फ्रिज, एसी का प्रयोग कम से कम करना होगा। क्योंकि मुख्य रूप से सीएफसी यानी क्लोरोफ्लोरो कार्बन गैसों का उत्सर्जन इन्हीं से होता है। औद्योगिक चिमनियों से निकले वाले धुंए में कार्बन-डाई-ऑक्साइड होती है, जो गर्मी बढ़ाती है। इनमें प्रदूषण रोकने के उपाय करने होंगे। सीएनजी चालित वाहनों के प्रयोग को बढ़ावा देना होगा। इंडस्ट्री से निकलने वाले कचरे को फिर से रिसाइकल करने की कोशिश करनी होगी। जंगलों की कटाई पर रोक लगानी होगी। ज्यादा से ज्यादा पेड़ लगाने होंगे। तब जाकर थमेगी ग्लोबल वार्मिंग।

भूख क्यों महसूस होती है?

कुछ लोग सोचते हैं कि खाली पेट होने पर भूख महसूस होती है, पर यह सही नहीं है। भूख का खाली पेट से कोई लेना-देना नहीं है। जैसे यदि किसी व्यक्ति को बुखार हो, तो हो सकता है कि उसका पेट खाली हो, पर उसे भूख महसूस नहीं होती है।

प्रकृति ने संतुलन बनाए रखने के लिए शरीर के लिए नियमित आहार तय किया हुआ है। दरअसल, रोजमर्रा के काम करने के कारण खून में पोषक तत्वों की कमी हो जाती है, जिससे भूख महसूस होती है। यही कारण है कि एक बीमार व्यक्ति, जो अधिकतर समय आराम करता है, कम एनर्जी का इस्तेमाल करता है, उसे कई दिन तक भूख महसूस नहीं होती है।

कभी-कभी जब हम समय पर खाना नहीं खाते हैं, तब मस्तिष्क में उपस्थित भूख-केंद्र सक्रिय हो जाता है, जिससे पेट व आंत एक साथ क्रियाशील हो जाती हैं और हमें भूख का अनुभव होने लगता है। यही कारण है कि जब आप भूखे होते हैं, तो आपके पेट से गड़गड़ाहट की आवाज सुनाई देती है।

जब हमें भूख लगी होती है, तो हमें किसी खास तरह के खाने की इच्छा नहीं होती। भूखा व्यक्ति किसी भी तरह का खाना खा सकता है। जब कुछ खास खाने की इच्छा हो, उसे भूख लगना नहीं कहा जाता। भोजन के मुख्य तत्व हैं: प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट्स, फैट्स, मिनरल्स, विटामिंस और पानी। शरीर के विकास और इसे स्वस्थ रखने में सभी तत्वों की अपनी विशेष भूमिका है।

शरीर के विकास और मांसपेशियों व टिश्यूज की मुरम्मत के लिए प्रोटीन, एनर्जी के लिए कार्बोहाइड्रेट्स व फैट्स, हड्डियों और टिश्यूज के निर्माण के लिए मिनरल्स, शरीर को बीमारियों से बचाने के लिए विटामिंस की जरूरत होती है। पानी सैल्स का मुख्य हिस्सा है। यह पोषक तत्वों और ऑक्सीजन को शरीर के विभिन्न हिस्सों तक ले जाता है।

धैर्य के बीज

स्वभाव से बड़ा ही क्रोधी एक गरीब किसान रामपुर नाम के गांव में रहता था। कभी-कभी तो वह क्रोध में इतना पागल हो जाता कि अपने पूरे घर में तोड़-फोड़ मचा देता। उसके इस बर्ताव के चलते गांव के सभी लोग उससे दूर ही रहते थे।

एक दिन उस गांव में एक जाने-माने महात्मा पधारे। सारा गांव उनके दर्शन के लिए उमड़ पड़ा। यह खबर आग की तरह फैल गई कि महात्मा के आशीर्वाद से बिगड़े काम बन जाते हैं और मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। किसान को भी महात्मा के बारे में पता चला। उसके मन में भी धनी बनने की इच्छा जागी। क्यों न एक बार महात्मा के दर्शन कर लिए जाएं, यह सोचकर वह भी सुबह-सुबह महात्मा के दर्शन के लिए निकल पड़ा। महात्मा की छोटी-सी कुटिया में गांव के सारे लोग अपनी बारी का इंतज़ार कर रहे थे। बहुत देर बैठे रहने के बाद उसे उनके दर्शन का सौभाग्य मिला। उसे काफी देर बैठकर इंतजार करना पड़ा था, इसलिए अंदर जाते ही किसान ने महात्मा को बहुत अपशब्द कहे। लेकिन महात्मा ने कुछ न कहते हुए सिर्फ उससे उसकी इच्छा पूछी।

'मैं बहुत धनी होना चाहता हूं,' जवाब में किसान ने यह कहा। बात पूरी होने पर बाबा ने कहा- 'यह लो, तुम्हारी मनोकामना पूरी होगी।' यह एक ऐसा बीज है जिसे बोकर तुम धनी बन सकते हो, लेकिन याद रखना अधिक क्रोध करने से यह फल नहीं देगा।'

घर जाकर किसान ने वह बीज बो दिया। किन्तु उसका क्रोध करना जारी रहा। जब बीज से अंकुर न फूटा तो किसान क्रोध से भरा महात्मा जी के पास गया और अपशब्द बोलने लगा। महात्मा जी धैर्यपूर्वक उसकी बात सुनते रहे। कुछ देर उसकी बात सुनने के बाद वे बोले- 'यह लो कुछ और बीज। इन्हें बोकर देखो तो तुम्हारा काम बने। लेकिन याद रखना, अधिक क्रोध करने से यह बीज भी नहीं फलेगा।'

इस प्रकार तीन-चार बार किसान महात्मा के पास गया और शिकायतें करता रहा। लेकिन महात्मा भी अपनी बात पर अडिग रहे और हर बार बीज देते रहे। समय बीतने लगा और धीर-धीरे किसान धन के बीज से अंकुर पाने की लालसा में अपने क्रोध पर काबू रखने लगा। उसे अपनी गलतियों का अहसास भी होने लगा था।

एक दिन वह फिर महात्मा के पास गया और बड़े प्यार और श्रद्धा के साथ बोला- 'बाबा, मैं अंधा था जो आपकी बात नहीं समझा। लेकिन अब मैंने क्रोध का त्याग कर दिया है, किन्तु फिर भी मुझे लाभ नहीं हो रहा। जबकि अन्य लोग आपके आशीर्वाद से फल-फूल रहे हैं। मुझे अब धन की कामना नहीं है, आप सिर्फ मेरी शंका का समाधान कर दीजिए।'

यह सुनकर महात्मा बोले- 'वत्स, तुमने क्रोध पर विजय पाई, यह बहुत अच्छी बात है। इससे यही सीख मिलती है कि आदमी को हमेशा सहनशील होना चाहिए। जो आदमी सहन करने में असमर्थ होता है, वही सबसे ज्यादा लड़ाई-झगड़े करता है, जिसके चलते घर में अशान्ति आती है। अगर क्रोध और झगड़े न हों तो आधे काम बिन कुछ किए बन जाएंगे। अब रही दूसरों की बात कि वह मेरे आशीर्वाद से फल-फूल रहे हैं, तो यह भी गलत है। सभी को अपनी मेहनत का फल मिल रहा है। मैं तो केवल उन्हें श्रम की सलाह देता हूं। मैं भी तुम्हारी तरह एक सीधा-सादा इंसान हूं। मैंने तुम्हें आज तक जितने बीज दिए वह असल में पत्थर थे, इसलिए उनमें अंकुर नहीं फूटता था। लेकिन उन्हीं के चलते अब तुममें धैर्य आ गया है। इसलिए अब तुम ये आमों की गुठलियां ले जाओ और इन्हें बो दो। पर याद रखना क्रोध का त्याग और श्रम की पूजा ही तुम्हें फल देगी।' किसान महात्मा जी के उपदेशों को अपने हृदय में उतार घर आ गया। उसने गुठलियां बो दीं और धीरे-धीरे उसके पास आमों का बगीचा तैयार हो गया।

महात्मा के गांव में आने से सबको बड़ा लाभ मिल रहा था। वह किसान भी यही चाहता था। लेकिन उसकी राह में एक बाधा थी...

बिंदू मिलाएं

बच्चो, यह नंबर केवल पढ़ने के लिए ही नहीं हैं। अगर आप क्रमानुसार इन्हें मिलाएंगे, तो आपको यहां एक खूबसूरत चित्र मिलेगा। तो उठाइए कलम और हो जाइए शुरू...

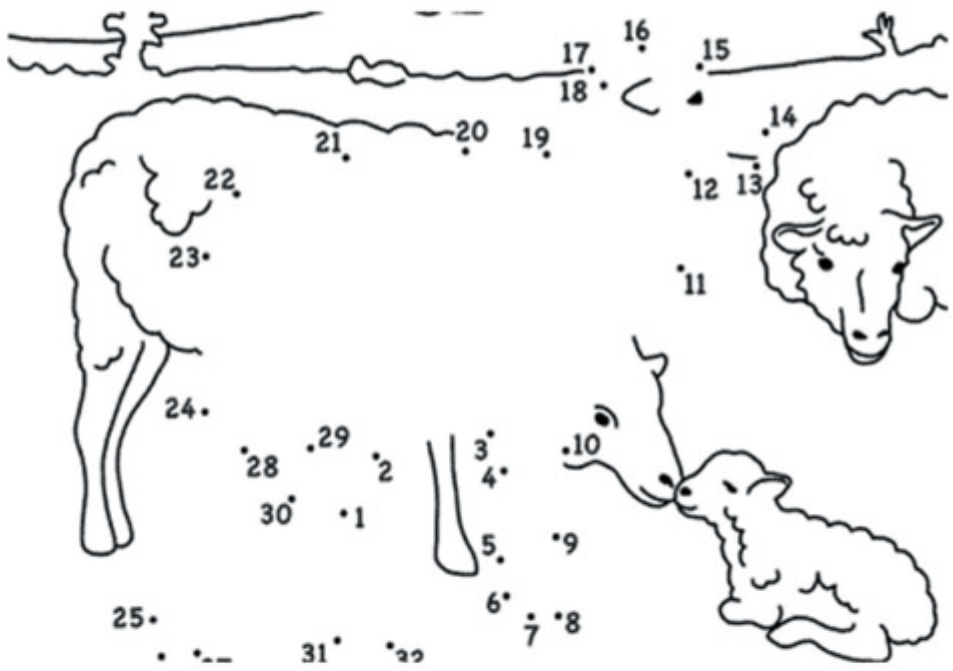

रंग भरो

कविता — बिटिया

मेरी नन्ही बिटिया है, जिसकी गजभर चुटिया है।
पढ़ने हरदम जाती है, अच्छे नम्बर लाती है।

पर थोड़ी शैतान है, गाती अपना गान है।
ऊधम बहुत मचाती है, मां को बहुत सताती है।

हद कर देती बिटिया जब, खींची जाती चुटिया तब।
तब थोड़ा शर्माती है, फिर अच्छी बन जाती है।